M: 9983140780/ 9549157392

भा.कृ.अनु.प.–सरसों अनुसंधान निदेशालय

सेवर, भरतपुर (राजस्थान) 321 303

डॉ. अशोक कुमार शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक एवं जनसम्पर्क अधिकारी

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक : 1.3.2023

सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा **ओरोबेंकी नियंत्रण पर कार्यशाला का आयोजन**

राई-सरसों में खरपतवारों का उचित प्रबंधन नहीं होने की दशा में फसल की पैदावार में भारी गिरावट आ जाती हैं। ओरोबेंकी (गुड़िया) सरसों का एक पूर्ण परजीवी खरपतवार है जो कि किसानों के लिए एक गंभीर समस्या बना हुआ है। इसके प्रकोप के कारण सरसों की उपज व दानों में तेल की मात्रा काफी घट जाती है जिससे किसानों को हरवर्ष भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता हैं। इसी संदर्भ में भाकृअनुप- सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर और कीटनाशक सूत्रीकरण प्रौद्योगिकी संस्थान (आईपीएफटी), गुरुग्राम, हरियाणा के सयुंक्त तत्वाधान में ओरोबेंकी नियंत्रण पर गाँव सेवला, भरतपुर में 28 फरवरी 2023 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के वैज्ञानिकों ने पाँच किसानों के खेतों पर ओरोबेंकी के नियंत्रण के लिए रासायनिक और अरासायनिक दवाओं (खरपतवारनाशियों) का परीक्षण किया गया। इस कार्यशाला के अंतर्गत सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर की अनुसंधान सलाहकार समिति, निदेशालय के वैज्ञानिकगण, आईपीएफटी के वैज्ञानिकगण, राजस्थान सरकार के कृषि विभाग भरतपुर के अधिकारीगण तथा किसानों ने सभी परीक्षणों का गहनता से अवलोकन किया। अनुसंधान सलाहकार समिति ने निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगाए गए ओरोबेंकी नियंत्रण के परीक्षणों की सराहना करते हुए कहा की आने वाले वर्षों में रसायनों द्वारा ओरोबेंकी का नियंत्रण शीघ्र हो पायेगा।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के निदेशक, डॉ. प्रमोद कुमार राय ने बताया कि ओरोबेंकी (गुड़िया) सरसों की फसल का एक छुपा हुआ शत्रु है जो सरसों के पोधों कि जड़ो से पौषक तत्व व जल का उपयोग कर फसल को कमजोर बनाता है, जिसका अभी तक कोई उपयुक्त प्रभावकारी नियंत्रण के उपाय नहीं हैं। उन्होने आईपीएफटी और निदेशालय द्वारा इस दिशा में किए जा रहे शोध परीक्षणों से सरसों में ओरोबेंकी से निजात पाने का आश्वासन दिया। डॉ. जितेंद्र कुमार, निदेशक, आईपीएफटी, गुरुग्राम ने कहा कि ओरोबेंकी के नियंत्रण के लिए उनके संस्थान द्वारा विकसित अभिनव शाकनाशी फोर्मूलेसन्स का किसान खेत पर प्रदर्शन काफी उत्साहवर्धक है और आने वाले वर्षों में इसके सार्थक परिणाम सामने आएंगे। डॉ. देशराज सिंह, अतिरिक्त निदेशक कृषि भरतपुर ने अपनी टीम के साथ किसानों के खेतों पर निदेशालय द्वारा ओरोबेंकी नियंत्रण के परीक्षणों का अवलोकन किया, सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा किए जा रहे परीक्षणों ने एक उम्मीद जगाई है कि आगामी वर्षों में ओरोबेंकी नियंत्रण के लिए दवाई किसानों तक उपलब्ध हो सकेगी। वैज्ञानिक-किसान संवाद में, सरसों व अन्य फसलों से संबन्धित कीटों, बीमारीयों, खरपतवारो इत्यादि की समस्याओं के निराकरण के सुझाव किसानों को बताए। डॉ. जितेंद्र कुमार ने कीट नियंत्रण के लिए विभिन्न जैविक उत्पादों तथा आसानी से उपलब्ध वनस्पति के उपयोग के बारे में भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जिसमे नीम कि गुठली का जलीय घोल, नीम कि खली, शीशम के पतों का अर्क, कीकर फली का अर्क इत्यादि प्रमुख थे। इस अवसर पर किसानों को कीटनाशकों के प्रयोग के समय उनके हानिकारक प्रभाव से बचने के लिए हाथ के दस्ताने, फेस मास्क, चस्मा इत्यादि भी वितरित किए गए। कार्यशाला का संचालन निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राम स्वरूप जाट और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम लाल चौधरी ने किया। लगभग 100 किसान इस कार्यशाला से लाभान्वित हुये।

(अशोक कुमार शर्मा)

Promotion of Safe & Judicious Use
of Pesticides and Application of
New Generation Formulations for
Crop Protection
Samsung Triple Camera
Shot with my Galaxy A50s